

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये त्रयोविंशं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে ত্রয়োবিংশং দশকম্ ॥

দক্ষচরিতং, চিত্রকেতুপাখ্যানং, বৃত্রধরণং, মরুদুৎপত্তিরণং চ
প্রাচেতসস্ত ভগবন্নপরো হি দক্ষ -

স্বৎসেরনং ব্যধিত সর্গরিবৃদ্ধিকামঃ।

আরিবভূরিথ তদা লসদষ্টবাহ -

স্তম্ভৈ ররং দদিথ তাং চ রধুমসিক্কীম্ ॥ 23.1 ॥

তস্যাত্মজাস্ত্বযুতমীশ পুনস্শহস্রং

শ্রীনারদস্য রচসা তর মার্গমাপুঃ।

নৈকত্রাসমৃষযে স মুমোচ শাপং

ভক্তোত্তমস্তুষিরনুগ্রহমের মেনে ॥ 23.2 ॥

ষষ্ট্যা ততো দুহিতৃভিঃ সৃজতঃ কুলৌঘান্

দৌহিত্রসুনুরথ তস্য স রিশ্বররূপঃ।

ত্রৈলোক্যত্রমিতমজাপযদিন্দ্রমাজৌ

দেব ত্রৈলোক্যমহিমা খলু সর্জিতৈত্রঃ ॥ 23.3 ॥

প্রাকশুরসেনরিষযে কিল চিত্রকেতুঃ

পুত্রাগ্রহী নৃপতিরঙ্গিরসঃ প্রভারাৎ।

লঙ্করৈকপুত্রমথ তত্র হতে সপত্নী -

সঙ্ঘৈরমুহ্যদরশস্তর মাযযাসৌ ॥ 23.4 ॥

তং নারদস্ত সমমঙ্গিরসা দযালুঃ

সম্প্রাপ্য তারদুপদর্শ্য সুতস্য জীরম্।

कस्यास्मि पुत्र इति तस्य गिरा रिमोहं
त्यक्त्वा र्ददर्शनरिधौ नृपतिं न्ययुञ्जत ॥ 23.5 ॥

स्तोत्रं च मन्त्रमपि नारदतोहथ लङ्करा
तोषाय शेषरपुषो ननु ते तपस्यन्।
विद्याधराधिपतितां स हि सपुत्रात्रे
लङ्कराप्यकुर्वन्मतिरन्त्रभजद्वरन्तम् ॥ 23.6 ॥

तस्मै मृगालधरलेन सहस्रशीर्षा
रूपेण बद्धनुतिसिद्धगणारूतेन।
प्रादुर्भरन्नचिरतो नुतिभिः प्रसन्नो
दत्तैरहहत्ततद्भ्रमनुगृह्य तिरोदधाथ ॥ 23.7 ॥

रुद्रञ्जमौलिरथ सोहपि च लङ्कलङ्कं
रर्षाणि हर्षुलमना भुरनेषु कामम्।
सङ्गापयन् गुणगणं तत्र सुन्दरीभिः
सङ्गातिरेकरहितो ललितं चचार ॥ 23.8 ॥

अत्यन्तसङ्गरिलयाय भवंप्रणुनो
नूनं स रूप्यगिरिमाप्य महत्समाजे।
निष्पङ्कमङ्ककृतरन्त्रभमङ्गजारिं
तं शङ्करं परिहसन्नुमयाभिषेपे ॥ 23.9 ॥

निस्सङ्गमङ्गयमयाचितशापमोक्षे
ब्रूत्वासुररमुपगम्य सुरेन्द्रयोधी।
भक्त्यात्ततद्भ्रुकथनैः समरे विचित्रं
शत्रोरपि भ्रममपास्य गतः पदं ते ॥ 23.10 ॥

रुद्रसेरनेन दितिरिन्द्ररधोदयताहपि
तान्प्रत्यूतेन्द्रसुहृदो मरुतोहभिलेभे।

दुष्टाशयेहपि शुभदैर भरन्निषेरा
तत्तादृशस्त्रुमर मां परनालयेश ॥ 23.11 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रयोविंशं दशकं समाप्तम् ॥